अर्हम्

शुभं भूयात् मंगलम् भूयात् कल्याणं भूयात्

पाथेय

धम्मो मंगल-मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् – पंजीकृत कार्यालय : 'युवालोक, पो. बो. नं. 16, लाडनूं-341306 (राज.) फोन : 01581-222114
E-mail : abtyp.ladnun@yahoo.in

अध्यक्ष
मर्यादा कुमार कोठारी
'सूवर्ण नयनी', 2/183,
कुड़ी भगतासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर-342005
फोन : 0291-2730340 (नि.)
फैक्स : 0291-2744816, 2731156 (नि.)
मो. : 94141-34340, 93526-92662
E-mail : maryadak@yahoo.co.in, maryad17@gmail.com

महामंत्री
एन. गौतमचन्द डागा
जी.सी. डागा एण्ड कम्पनी
श्री बालाजी काम्पलेक्स, 14, विरप्पन स्ट्रीट,
दूसरी मंजिल, साहूकारपेट, चेन्नई-600079
फोन : 044-25290715 (नि.)
फैक्स : 044-25366788 मो. : 94444-07423
E-mail : cagcdaga@gmail.com

अंक -24

दिनांक : 16 अक्टूबर 2009

प्रिय साथियों,

जय जिनेन्द्र!

पाथेय को कहाँ से शुरू करूँ सोच रहा हूँ क्योंकि समय अपनी गति से चला व 30/9/2009 को अभातेयुप के अध्यक्ष निर्वाचन हुए दो वर्ष हो गए। 30 सितम्बर से 25 अक्टूबर तक समय तो बोनस है। दो वर्ष का कार्यकाल पूज्य प्रवरों की असीम कृपादृष्टि से सान्नद रहा। पहले वर्ष की थीम रही **''ज्यों-ज्यों चरण बढ़ेंगे आगे, स्वत: मार्ग बन जाएगा''** इस वर्ष की थीम रही **''स्वर गूँजे निर्माण के''** तथा नारा रहा **''चरणों को गतिमान बनाएँ, सपनों को साकार बनाएँ''** इन सब पर चलकर ही आप सबकी सहभागिता से दो वर्ष निर्विघ्नता के साथ सम्पन्न हो गये।

इन दो वर्षों में शाखा परिषदों की संगठन यात्रा कर मैंने भरपूर ऊर्जा तथा देशभर के युवा साथियों का स्नेह भी पाया। संगठन यात्रा करना वैसे दुरुह कार्य है क्योंकि समयबद्धता व व्यवस्था हर सहयात्री नहीं रख पाता। स्वास्थ्य के प्रति भी हमेशा सजग रहना पड़ता है। अलग-अलग प्रदेशों के वातावरण, रहन-सहन, खान-पान, संस्कृति में स्वयं को ढालना पड़ता है तथा स्थानीय माहौल के अनूरूप स्वयं को प्रस्तुत होना होता है। सिलचर से बाड़मेर तथा पंचकुला से कांचीपुरम तक यात्रा इन दो वर्षों में मैं कर पाया फिर भी मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, नेपाल के पूरे क्षेत्र बाकी रह गये। इसका मुझे अफसोस भी है। शाखा परिषदों के सदस्यों को उनके दायित्व बोध के प्रति सजग करना मुख्य कार्य रहा। यात्राओं में जहाँ-जहाँ जाना हुआ वहाँ जैन जीवन शैली का व्यापक प्रसार किया। जैनी होने पर गौरवान्वित होना तथा तेरापंथी होने पर गर्व महसूस करने की सार्थकता पर भी सवाल सभी जगह पूछा। देशभर में युवाशक्ति तो बहुत है पर जरूरत है उसे सही रूप में नियोजित कार्यक्रम देने की। दो वर्षों में कोशिश की गई, सेवा के अन्तर्गत् युवादिवस पर रक्तदान के माध्यम से पूरे देश में सभी जगह एक ही कार्यक्रम हो, संस्कार में प्रथम वर्ष जैन जीवन शैली की सी.डी. व द्वितीय वर्ष में बारह व्रत की विवेचना की सी.डी. तथा अभिनव सामायिक और संगठन में जगह-जगह आंचलिक संगठन कार्यशालाओं का दौर चला। दो वर्षों में प्रकाशन पर भी विशेष ध्यान दिया गया। ये सब आप सभी युवा साथियों के अथक परिश्रम से हो पाया, सभी का सहयोग रहा तभी दो वर्षों में सभी कार्य एकजुटता से पूरे हो पाए। संगठन में अनुशासन के कारण हो सकता है कुछ परिषदों पर संवैधानिक कार्यवाही करनी पड़ी या चुनाव की समयबद्धता को पुरजोर से लागू किया, जिसके कारण कुछ व्यक्ति नाराज भी हुए पर ये संस्था के हित में किया गया इसलिए बाद में सभी की ओर से समर्थन मिला। इन दो वर्षों में बाधाएँ भी आई पर पूज्यवरों का आशीर्वाद सदैव साथ में रहने से उन बाधाओं को पार किया। वैसे अगर दो वर्षों के संस्मरण लिखूं तो किताबें भर जाये पर चाहूँगा कि अब कार्य एक व्यवस्था के साथ हो जिससे किसी को भी तकलीफ न हो। वार्षिक अधिवेशन आपके सामने है, आप पूर्ण तैयारी के साथ अधिवेशन पर पधारें। विगत दो वर्षों में मेरे द्वारा किसी के साथ अविनय असातना हुई हो तो मैं खमत खामणा करता हूँ व आप सबके भरपूर वात्सल्य व सहयोग के प्रति आभार भी प्रकट करता हूँ। 2007-2009 का कार्यकाल तो **अलविदा** से शुरू होकर **M.O.U.** तक के बीच में रहा, यह घटनाक्रम सदैव मेरे स्मृति पटल पर बना रहेगा। सभी के प्रति पुन: कृतज्ञता।

चरणों को गतिमान बनाएं, सपनों को साकार बनाएं।

सलिल-कण हूँ कि पारावार हूँ मैं?
स्वयं छाया, स्वयं आभार हूँ मैं।
बँधा हूँ, स्वप्न है, लघु वृत्त में हूँ,
नहीं तो व्योम का विस्तार हूँ मैं।

सामना चाहती जो बीन-उर में,
विकल वह शून्य की झंकार हूँ मैं।
भटकता, खोजता हूँ ज्योति तम में,
सुना है, ज्योति का आगार हूँ मैं।

जिसे निशि खोजती तारे जलाकर,
उसी का कर रहा अभिसार हूँ मैं।
जनम कर मर चुका सौ बार लेकिन,
अगम का पा सका क्या पार हूँ मैं?

कली की पंखड़ी पर ओस-कण में
रंगीले स्वप्न का संसार हूँ मैं;
मुझे क्या, आज ही या कल मरूँ मैं?
सुमन हूँ, एक लघु उपहार हूँ मैं।

जलद हूँ, दर्द हूँ, दिल की कसक हूँ,
किसी का हाय, खोया प्यार हूँ मैं।
गिरा हूँ भूमि पर नन्दन-विपिन से,
अमर-तरु का सुमन सुकुमार हूँ मैं।

मधुर जीवन हुआ कुछ प्राण! जब से
लगा ढोने व्यथा का भार हूँ मैं,
रुदन ही एक पथ प्रिय का, इसी से,
पिरोता आँसूओं का हार हूँ मैं।

मुझे क्या गर्व हो अपनी विभा का?
चिता का धूलि-कण हूँ, क्षार हूँ मैं;
पता मेरा तुम्हें मिट्टी कहेगी,
समा जिसमें चुका सौ बार हूँ मैं।

न देखे विश्व पर मुझको घृणा से,
मनुज हूँ सृष्टि का शृंगार हूँ मैं;
पुजारिन! धूलि से मुझको उठा लो,
तुम्हारे देवता का हार हूँ मैं।

सुनूं क्या सिन्धु! मैं गर्जन तुम्हारा?
स्वयं युग-धर्म का हुंकार हूँ मैं;
कठिन निर्घोष हूँ भीषण अशनि का,
प्रलय-गाण्डीव की टंकार हूँ मैं।

दबी-सी आग हूँ भीषण क्षुधा की,
दलित का मौन हाहाकार हूँ मैं;
सजग संसार, तू निज को संभाले,
प्रलय का क्षुब्ध पारावार हूँ मैं।

बँधा तूफान हूँ, चलना मना है,
बँधी उद्दाम निर्झर-धार हूँ मैं;
कहूँ क्या, कौन हूँ? क्या आग मेरी?
बँधी है लेखनी, लाचार हूँ मैं।

नये नेतृत्व के प्रति भी मंगल कामना प्रेषित इस पाथेय के माध्यम से करना चाहूँगा। एक कविता उन्हें भी समर्पित -

आनेवालो, तुम्हें प्रणाम!
'जय हो' नव होतागण, आओ,
संग नयी आहूतियाँ लाओ,
जो कुछ बने, फेंकते जाओ, यश जानता नहीं विराम।
आनेवालो, तुम्हें प्रणाम!

टूटी नहीं शिला की कारा,
लौट गयी टकरा कर धारा,
सौ धिक्कार तुम्हें यौवन के वेगवन्त निर्झर उद्दाम!
आनेवालो, तुम्हें प्रणाम!

फिर डंके पर चोट पड़ी है,
मौत चुनौती लिये खड़ी है,
लिखने चली आग, अम्बर पर कौन लिखायेगा निज नाम?
आनेवालो, तुम्हें प्रणाम!

आगे आओ वीर जवान!
दिशा तप्त हो लरज़ रही है,
घटा क्रोध से गरज रही है,
लाल-लाल टुकड़े उड़ते हैं, उठा चाहता है तूफान।
आगे आओ वीर जवान!

दुस्तर पारावार अगम है,
सम्मुख शैल प्रांशु, दुर्गम है,
कोई, जो इन्हें लाँघकर करे आज दुर्जय अभियान?
आगे आओ वीर जवान!

क्षीण हुई जाती है लाली,
होम-शिखा है बुझने वाली,
एक लपट के लिए सिद्धि है रुकी, करो नव स्नेह प्रदान।
आगे आओ वीर जवान!

पुनश्च - पाथेय छपते-छपते समाचार आया कि अभातेयुप के पूर्व सहमंत्री श्री मोहनलाल चौरड़िया का अचानक दुर्घटना में देहावसान हो गया। गत 2 अक्टूबर को लाडनूं में मुलाकात हुई व डूंगरगढ़ तक वे हमारे साथ थे। तेयुप डूंगरगढ़ की बैठक में साथ रहे व बाद

में मनुहार के साथ मुझे, श्री अविनाश नाहर तथा श्री कमल पटावरी को घर पर नाश्ता कराने ले गये। पारिवारिक जनों से भी मिलवाया एवं मर्यादा महोत्सव पर घर में ठहरने व आने का आमंत्रण भी दिया। उस दिन उनके तेरस का उपवास भी था। जिन्दादिल, खुशमिजाज, चिरयुवा, कर्मठ, लगनशील, संघ व संघपति के प्रति समर्पित भाई श्री मोहन चौरड़िया हम सब युवाओं के दिलों में चिरस्थायी अपनी स्मृति छोड़ गये। उनके किये गये कार्य हमारे लिए प्रेरणादायी रहेंगे। उनके आकस्मिक निधन पर अभातेयुप परिवार की ओर से उनकी आत्मा की आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना।

ओम् अर्हम्।

आपका अपना ही
मर्यादा कुमार कोठारी

अर्हम्

सत्र 2007-2009 में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उपाध्यक्ष पद के दायित्व निर्वहन के माध्यम से मुझे संघ सेवा का सुअवसर प्राप्त हो सका, इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ मैंने दायित्व निभाने का प्रयास किया और इसके लिए मुझे आत्मतोष है। गृहस्थ के लिए जैन धर्म में सर्वोच्च पद है श्रावक का जिसे न कोई दे सकता है और न ही छीन सकता है, सिर्फ स्वयं के कर्म और पुरुषार्थ से ही इस पद की प्राप्ति संभव है। पद निर्लिप्त होकर श्रावकत्व की दिशा में अग्रसर होता रहूँ, यही मंगलकामना करता हूँ। आगामी सत्र के लिए नए नेतृत्व एवं संस्था के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ-

संजय खटेड़
उपाध्यक्ष-प्रथम

अर्हम्

सेवा, संस्कार व संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों की प्रगति की दिशा में गतिशील अभातेयुप का उपाध्यक्ष पद गौरव की अनुभूति के साथ-साथ दायित्व का भान भी कराता है। परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की कृपा से संघ के प्रति दायित्व निभाने की दिशा में प्रयासरत हूँ यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है। गुरू के प्रति सर्वातमना समर्पण भाव के साथ जीवनभर संघ की सेवा करता रहूँ। इसी मंगल कामना के साथ नए नेतृत्व के प्रति अनन्त मंगलकामनायें।

तुलसी दुगड़
उपाध्यक्ष-द्वितीय

अर्हम्

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के मुख्य उद्देश्य है - सेवा, संस्कार और संगठन। इन उद्देश्य की सम्पूर्ति के लिए अभातेयुप अपनी शाखा परिषदों को समय-समय पर आवश्यक निर्देश देती आ रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मर्यादा कुमार कोठारी ने अध्यक्ष भार ग्रहण करते ही निर्णय लिया कि शाखा परिषदों से नियमित संवाद किया जाए। अभातेयुप और शाखा परिषदों के बीच सेतु का कार्य किया है- पाथेय ने। प्रतिमाह पाथेय के माध्यम से अभातेयुप द्वारा दिशा निर्देश शाखा परिषदों को संप्रेषित किया गया। पाथेय में केन्द्रीय प्रतिनिधियों की संगठन यात्रा, अध्यक्षीय स्वर एवं प्रतियोगिता आदि का भी समावेश निरन्तर किया गया।

अनेक शाखा परिषदों ने पाथेय का अपनी कार्यसमिति की बैठक में वाचन किया। जिन शाखा परिषदों ने अपनी जागरूकता का परिचय दिया, उनको साधुवाद। पाथेय के माध्यम से कभी-कभी कड़ा निर्देश भी दिया गया। हमारा उद्देश्य एकरूपता, अनुशासन और संविधान की अनुपालना शाखा परिषदें अपनाये था, अगर किसी भी युवासाथी या शाखा परिषद् को कोई ठेस पहुँची हो तो सरल हृदय से मैं अपनी ओर से बारम्बार खमत खामणा करता हूँ।

लाडनूं अधिवेशन में नये नेतृत्व का चयन किया जाएगा। उनके प्रति अग्रिम शुभकामना प्रेषित करता हूँ। आप सभी युवा साथियों के प्रति मंगल कामना।

एन. गौतम चन्द डागा
(महामंत्री)

अर्हम्

युवा संगठन धर्म संघ का प्राण तत्व है। युवकों को शारीरिक व नैतिक रूप से शक्तिशाली, अनुशासित व आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ उठो, जागो और तब तक विश्राम न करो जब तक ध्येय की पूर्ति नहीं हो जाती को आत्मसात् करने की आवश्यकता है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी भी युवकों को उक्त संदेश अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा प्रशिक्षण के माध्यम से अनवरत दे रहे हैं। सेवा, संस्कार व संगठन के त्रिआयामी उद्देश्यों के साथ अभातेयुप ने इन दो वर्षों में जो प्रगति की उससे मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। अपेक्षा है कि हम सभी युवा साथी अधिवेशन के अवसर पर उक्त संदेश को आत्मसात् करने के लिए संकल्पित हो जाये साथ ही पूज्य गणाधिपति श्री तुलसी के निम्नांकित संदेश के महत्व को समझने का प्रयत्न करें 'प्रतिष्ठा पद से नहीं पद तो व्यवस्था मात्र है'।

सत्र 2007-09 के अभातेयुप में सहमंत्री-प्रथम के दायित्व एवं कर्त्तव्य बोध को शब्दों में वर्णित करना संभव नहीं है। चूंकि यह दायित्व मेरे लिए नया एवं दुरुह कार्य था पर गुरू आशीर्वाद, चारित्रात्माओं का मार्गदर्शन एवं साथियों के सहयोग से यह दायित्व भी सहज

बन गया। विभिन्न क्षेत्रों की संगठन यात्राओं एवं स्थानीय परिषदों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में कार्यसमिति के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं युवासाथियों द्वारा प्रदत्त आत्मीय स्नेह एवं अवर्णीय सहयोग मिला। अभातेयुप के गौरवशाली स्वरूप को बनाए रखने के साथ गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए कुछ कर पाने का प्रयास कर पाया हूँ। अभातेयुप द्वारा प्रकाशित युवादृष्टि एवं पाथेय को समयानुसार प्रासंगिक, आकर्षक एवं पठनीय बनाने में श्रम का नियोजन अत्यन्त जागरूकता के साथ किया गया फिर भी मेरे द्वारा जाने अनजाने में विचार, वाणी या व्यवहार से हुई गलतियाँ जिससे आपके सुहृदय को किसी भी तरह से ठेस पहुँची हो तो मैं हृदय से क्षमायाचना करता हूँ।

आने वाले नये नेतृत्व के प्रति मंगल कामना।

अविनाश नाहर
सहमंत्री-प्रथम

अर्हम्

अभातेयुप का प्रकाशन पाथेय केन्द्रीय परिषद् व शाखा परिषद् के जोड़ने का सेतु है। इसके माध्यम से आगामी कार्यक्रमों की जानकारी, सम्पन्न कार्यक्रमों की झलक, प्रतियोगितायें, संगठन समाचार की जानकारी मिलती है। अध्यक्षीय आह्वान युवा शक्ति में नया जोश भरने वाला है।

इन दो वर्षों में मैंने अनुभव किया कि केन्द्रीय परिषद् के सदस्य शाखा परिषदों की जितनी ज्यादा संगठन यात्रायें करेंगे। परिषदे ज्यादा सक्रिय होगी। केन्द्रीय परिषद् के आयाम संघगान, जैन विद्या कार्यशाला, व्रत दीक्षा कार्यशाला, जैन जीवन शैली कार्यशाला, अभिनव सामायिक, संगठनात्मक कार्यशाला आदि कार्यक्रम युवा शक्ति के साथ-साथ सम्पूर्ण श्रावक समाज को धर्मसंघ के साथ जोड़ने के बहुत अच्छे उपक्रम हैं।

युवादृष्टि व तेरापंथ टाइम्स जो कि नये स्वरूप के साथ प्रकाशित हुए वह प्रशंसनीय है एवं पठनीय सामाग्री के साथ हमारे लिए बहुत उपयोगी है। अभातेयुप के उत्तरोत्तर विकास की शुभकामना के साथ।

निलेश बैद
सहमंत्री-द्वितीय

अर्हम्

इस बात का सात्विक गौरव है कि मुझे संघ सेवा के निमित्त अभातेयुप के सत्र 2007-09 के कोषाध्यक्षीय दायित्व को निभाने का सुअवसर मिला। दायित्व के प्रति पूर्ण निष्ठा भाव के साथ कार्य करते हुए कार्यकाल की समाप्ति के अवसर पर आत्म संतोष की अनुभूति हो रही है। युवा साथियों एवं उदारमना श्रावक समाज के सहयोग से परिषद् के आर्थिक कोष को सुदृढ़ता मिली। इससे मन में और अधिक उत्साह है परिषद् आगे भी और अधिक आर्थिक सुदृढ़ता प्राप्त करे, यही मंगल कामना है।

नए नेतृत्व के प्रति भी हार्दिक शुभकामना एवं मंगलकामना

प्रदीप बोथरा
कोषाध्यक्ष

अर्हम्

"संगठन किसी भी संस्था का प्राण तत्व होता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एक विशाल नेटवर्क है। देशभर में फैली अपनी 315 शाखाओं का।" "संगठन को मजबूत" और "संविधान अनुपालना" की दृष्टि से इन दो वर्षों के भीतर एक सलक्ष्य प्रयास आशातीत सफल रहा। अभातेयुप परिवार के साथ परिषदों ने अपने कदम मिलाकर विभिन्न कार्यों को गति प्रगति देकर नई ऊँचाइयों को छूने की कोशिशों को कामयाबी में बदलने में सफलता हासिल की। पूज्यवरों के दिशा निर्देशानुसार "संगठन कार्यशाला" के माध्यम से युवकों को विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण देकर संगठन को और अधिक सक्रिय बनाने की दिशा में कदम आगे बढ़ाये। Team Work एवं सभी युवा साथियों को जोड़ने का आह्वान सभी युवा साथियों से कर हमने एक नया कार्य आरम्भ किया जिसके माध्यम से नई प्रतिभाओं को हम समाज के सामने ला सकें। एकरूपता की दृष्टि से कार्यों को सम्पादित करने, नया बीड़ा उठाकर विभिन्न कार्यों की गूंज समाज और देशभर में रही और धर्म संघ की अच्छी प्रभावना का सेतु बना। चाहे वह रक्तदान (युवादिवस) हो, अभिनव सामायिक हो, जैन विद्या कार्यशाला हो, किशोर मण्डल प्रतियोगिता हो या बारह व्रत कार्यशाला हो। संगठन यात्राओं, विभिन्न समस्याओं के समाधान एवं संविधान अनुपालना के सन्दर्भ में विभिन्न शाखा परिषदों के साथियों से सम्पर्क के माध्यम से उनके विचारों को जाना एवं हमारे भीतर नई ऊर्जा के संचार का माध्यम बना।

कुल मिलाकर कार्यकाल के दौरान अपने दायित्वों का निर्वाह करने में न सिर्फ कर्त्तव्यपरायणता शक्ति एवं अद्भुद आनन्द की अनुभूति रही। कार्य करते हैं तो निश्चित ही गलतियां स्वाभाविक है और मुझसे भी सम्भवत: गलतियां हुई होगी। अंत:करण से सभी से बारम्बार खमत खामणा एवं सहयोग, मार्गदर्शन एवं सहभागिता के लिए साधुवाद।

सहयोग एवं सहभागिता की कामना।

रमेश जैन (सुतरिया)
संगठन मंत्री

संगठन यात्रा

शाखा परिषदों की नियमित सार-संभाल एवं सक्रियता हेतु अ.भा.ते.यु.प. पदाधिकारियों/सदस्यों द्वारा की गई संगठन यात्रा एवं कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण

दिनांक	स्थान	सान्निध्य	कार्यक्रम	सहयोगी
श्री मर्यादा कुमार कोठारी, अध्यक्ष				
2 सितम्बर, 2009	सिरियारी	मुनिश्री सागरमल 'श्रमण'	आचार्य भिक्षु चरमोत्सव विशाल रक्तदान शिविर	श्री निर्मल गोखरू, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल, श्री निर्मल जैन, श्री पवन भंडारी, श्री दिनेश गुजरानी, श्री डूंगर सालेचा, श्री शिवकुमार ढेलड़िया, श्री नरेश सिंघवी
4 सितम्बर, 2009	मानसा, भीखी	साध्वीश्री तेजकुमारी		श्री राकेश गर्ग, श्री विनोद जैन
	लहरागागा	साध्वीश्री शुभवती		" " " "
	सुनाम	साध्वीश्री सोहनां छापर		" " " "
	पँचकुला			" " " "
5 सितम्बर, 2009	मंडी गोविन्दगढ़	मुनिश्री कमल कुमार		श्री राकेश गर्ग, श्री विनोद जैन, श्री प्रवीण जैन
	नाभा, समाना			" " " "
	संगरूर	मुनिश्री जयचंदलाल		" " " "
	धूरी	समणी निर्देशिका कंचनप्रज्ञा		" " " "
	जगराओ	मुनिश्री रमेश कुमार		" " " "
6 सितम्बर, 2009	लुधियाना अहमदगढ़	मुनिश्री सुमेरमल, मुनिश्री उदित कुमार		श्री संजय खटेड़, श्री राकेश गर्ग, श्री विनोद जैन, श्री प्रवीण जैन
11 सितम्बर, 2009	घाटकोपर (मुंबई)	साध्वीश्री कनक रेखा	संगठन चर्चा (17 परिषदों से)	श्री रमेश सुतरिया, श्री राकेश आच्छा, श्री महावीर कोठारी, श्री ललित समदड़िया
12 सितम्बर, 2009	मैसूर	साध्वीश्री अशोकश्री	दक्षिणांचल युवा सम्मेलन	श्री गौतम डागा, श्री निलेश बैद, श्री राजेन्द्र सेठिया, डॉ. मनोहर भारती, श्री बजरंग जैन, श्री दीपचंद नाहर, श्री सुरेश कोठारी, श्री हनुमान लुंकड़, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री कैलाश बोराणा, श्री सुशील चौरड़िया, श्री अशोक डागा, श्री रमेश पटावरी, श्री ललित मांडोत, श्री अशोक डागा, श्री विनोद लुणिया, श्री प्रवीण बाबेल, श्री महावीर गिड़िया, श्री जितेन्द्र पालगोता, श्री रमेश डागा, श्री विक्रम दुगड़
13 सितम्बर, 2009				
15 सितम्बर, 2009	बैंगलोर	साध्वीश्री कीर्तिलता	तेयुप बैठक	श्री दीपचंद नाहर, श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री कैलाश बोराणा, श्री ललित मांडोत, श्री विक्रम दुगड़
16 सितम्बर, 2009	हैदराबाद	साध्वीश्री सत्यप्रभा	तेयुप वैबसाईट लांच	श्री गौतम डागा, श्री निलेश बैद, श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री नरेन्द्र नाहटा
17 सितम्बर, 2009	विजयवाड़ा			श्री गौतम डागा, श्री निलेश बैद, श्री नरेन्द्र नाहटा
18 सितम्बर, 2009	विजयनगरम्, विशाखापत्तनम्			" " " "

19 सितम्बर, 2009	चैन्नई (तंडियारपेट) चैन्नई (पल्लावरम्)	मुनिश्री जिनेश कुमार मुनिश्री धर्मेश कुमार		श्री गौतम डागा श्री निलेश बैद, श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री अशोक डागा
	चैन्नई		तेयुप कार्यसमिति बैठक	श्री गौतम डागा, श्री निलेश बैद, श्री निर्मल के. जैन, श्री अशोक डागा, श्री प्रवीण बाबेल, श्री रमेश डागा
20 सितम्बर, 2009	चैन्नई (तंडियारपेट)	मुनिश्री जिनेश कुमार	तमिलनाडु स्तरीय संगठन कार्यशाला	श्री गौतम डागा, श्रीनिलेश बैद, श्री राजेन्द सेठिया, श्री निर्मल के. जैन, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री अशोक डागा, श्री रमेश पटावरी, श्री प्रवीण बाबेल, श्री महावीर गिरीया, श्री रमेश डागा
20 सितम्बर, 2009	बैंगलोर		संघगान क्वार्टर फाईनल	श्री गौतम डागा, श्री निलेश बैद, श्री बजरंग जैन, श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री दीपचंद नाहर, श्री रमेश डोडावाला, श्री जयंतीलाल तातेड़, श्री कमल सेठिया, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री कैलाश बोराणा, श्री ललित मांडोत, श्री विक्रम दुगड़
21 सितम्बर, 2009	कांदिवली (मुंबई)	साध्वीश्री सूरज कुमारी समणी निर्देशिका सन्मतिप्रज्ञा	संगठन चर्चा (13 परिषदों से)	श्री रमेश सुतरिया, श्री बी.सी. भालावत, श्री निर्मल जैन, श्री राकेश आच्छा, श्री महावीर कोठारी,श्री ललित समदड़िया
30 सितम्बर, 2009	लाडनूं	पूज्यप्रवर		श्री अविनाश नाहर

श्री निलेश बैद, सहमंत्री–II

4 अक्टूबर, 2009	बैंगलोर	साध्वीश्री कीर्तिलता	कर्नाटक स्तरीय संगठनात्मक कार्यशाला	श्री दीपचन्द नाहर, श्री सुशील चौरड़िया, श्री रमेश पटावरी, श्री ललित मांडोतर, श्री कैलाश बोराणा, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री विक्रम दुगड़

श्री कैलाश बोराणा, कार्यसमिति सदस्य

5 सितम्बर, 2009	गदग, सिंधनूर, बल्लारी			श्री सुरेश कोठारी, श्री सुरेश दक
9 सितम्बर, 2009	विजयनगर, बैंगलोर			श्री सुशील चौरड़िया

श्री शिव कुमार डेलरिया, क्षेत्रीय सहयोगी

15 अगस्त, 2009	जसोल	मुनिश्री रविन्द्र कुमार	जैन विद्या कार्यशाला समापन समारोह	श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री डूंगर सालेचा, श्री पीयूष सालेचा
16 अगस्त, 2009	आसोदरा		कार्यसमिति बैठक	

सूचना

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का 43वाँ वार्षिक अधिवेशन पूज्यवरों के पावन सान्निध्य में दिनांक 24, 25 व 26 अक्टूबर 2009 लाडनूँ में आयोजित हो रहा है। आप से अनुरोध है कि अधिवेशन में संभागी बनने वाले प्रतिनिधियों का नाम व विवरण (मयशुल्क 500 रू. प्रति प्रतिनिधी) संयोजकीय कार्यालय भिजवाने का कष्ट करें। दिनांक 10 अक्टूबर 2009 तक प्राप्त होने वाले पंजीयन आवेदनों को ही प्राथमिकता दी जाएगी। अधिक जानकारी के लिए अधिवेशन संयोजक – श्री संजय खटेड़ –राष्ट्रीय उपाध्यक्ष–प्रथम मो. : 9810239149 व सहसंयोजक – श्री निर्मल कोटेचा मो. : 9435106058, श्री अजय चौरड़िया मो. : 9414400324 से सम्पर्क करें।

सत्र 2009-2010 के शाखा परिषदों के निर्वाचित अध्यक्ष/मंत्री

स्थान	अध्यक्ष का नाम	मंत्री का नाम
दक्षिण मुम्बई	श्री हिम्मत धांग	श्री पंकज सुराणा
मुलुण्ड	श्री पवन गेलड़ा	श्री राकेश तुकालिया
थाने	श्री हसमुख श्रीश्रीमाल	श्री जितेन्द्र राठौड़
मुम्बरा	श्री पुखराज बाफना	श्री मनोज नवलखा
डोम्बीवली	श्री माणक डांगी	श्री राकेश कोठारी
भिवंडी	श्री कमलेश बाफना	श्री महावीर डेलड़िया
दादर	श्री सुनील मेहता	श्री नितेश भंसाली
कुर्ला	श्री ललित एच. डांगरा	श्री हस्तीमल सुतरिया
काजूपाड़ा	श्री शांतिलाल सांखला	श्री संजय कुमार चौधरी
जूना कुर्ला	श्री अरूण भंडारी	श्री महेश चौरड़िया
घाटकोपर	श्री विनोद बडोला	श्री पुखराजमल बाफना
विक्रोली बम्बखाना	श्री राजेश छाजेड़	श्री गौतम मेहता
विक्रोली	श्री उत्तम चौधरी	श्री रमेश राठौड़
भांडुप	श्री पुखराज सिंघवी	श्री हिम्मत हिरन
उरण	श्री सुभाष मेहता	श्री महेन्द्र एम. सिंघवी
चेम्बुर	श्री प्रकाश सोनी	श्री मुकेश बडाला
सायन, कोलीवाड़ा	श्री भूपेन्द्र बडोला	श्री सुभाष मेहता
पनवेल	श्री विनोद लक्ष्मीलाल बाफना	श्री शिवलाल शांतिलाल देवड़ा
बेलापुर	श्री बाबूलाल परमार	श्री दिनेश मेहता
अरोली	श्री वीरेन्द्र समोता	श्री देवेन्द्र एम. बोहरा
कोपरखेराने	श्री भगवती पगारिया	श्री मनीष ओसवाल
नेरूल	श्री प्रवीण चिंडालिया	श्री आनन्द सोनी
वाशी	श्री सुनील सोनी	श्री अजीत कच्छारा
मानखुर्द	श्री प्रदीप कुमार छाजेड़	श्री सुनील सिंघवी
गोवांडी	श्री मनोज जीवराज बोहरा	श्री राहुल कुमार डांगी
नाला सोपारा	श्री चन्द्र प्रकाश धाकड़	श्री लक्ष्मी लाल मेहता
भायन्दर	श्री मनोहरलाल मेहता	श्री भगवती लाल भंडारी
अंधेरी	श्री शांतिलाल रोशनलाल कोठारी	श्री दिनेश बरमेचा
विले पार्ले	श्री कपूर कोठारी	श्री मनोज मेहता
सान्ताक्रुज	श्री भगवतीलाल सोहनलाल धाकड़	श्री राजेश चौधरी
खार	श्री गौतम गोखरू	श्री प्रदीप बोहरा
बांद्रा	श्री प्रकाश बोहरा	श्री मनीष बापना
मीरारोड	श्री भगवतीलाल मेहता	श्री राजेश कुमार कोठारी
दहीसर	श्री दिलीप कच्छारा	श्री कमल लोढ़ा
बोरीवली	श्री विनोद बोहरा	श्री संजय पारसमल बोथरा
कांदीवली	श्री नवरतन पानमल सेठिया	श्री सुनील कन्हैयालाल संचेती
मलाड	श्री ललित बाफना	श्री शांतिलाल चौधरी
गोरेगाँव	श्री अशोक चौधरी	श्री सुभाष सिंघवी
जोगेश्वरी	श्री चेतनकुमार धनपतराज सूर्या	श्री निर्मल बाबेल
राजसमन्द	श्री अनिल दुगड़	श्री भूपेश
कांकरोली	श्री कमलेश बोहरा	श्री नरेश चौरड़िया
उदयपुर	श्री कमल नाहटा	श्री कपिल इन्टोदिया
कोटा	श्री भूपेन्द्र बरड़िया	श्री विनय दुगड़
मैसूर	श्री महेन्द्र नाहर	श्री रमेश नौलखा
सैंथिया	श्री राजेश पुगलिया	श्री अमित सेठिया
सवाई माधोपुर	श्री अनिल जैन	श्री आलोक जैन
उधना	श्री मीश्रीमल नागावत	श्री प्रवीण मेड़तवाल
घणसोली	श्री राजेश चौधरी	श्री सुरेश मादरेचा
सिशोदा	श्री दिनेश एम. धाकड़	श्री दिनेश ए. धाकड़
गंगापुर	श्री राकेश बाफना	श्री प्रवीण नौलखा

आचार्य भिक्षु जीवन झाँकी प्रतियोगिता -XX के उत्तर

1. विनय निष्ठ, मिष्टभाषी मुनिश्री चम्पालालजी मीठिया, राजनगर। पेज नं. 8
2. दृश्य और काव्य दोनों का योग। पेज नं. 3
3. ये ग्रह गण जीवन के साथी, तेज पूज मुख झलक रहा। तप: पूत इस वर्ण सांवरे में भी कैसा ओज अहा! पेज नं. 13
4. पाँचवे स्थान सूर्य-बुध दोनों होने से पेज नं. 15
5. संखवाली-शिवगंज से लेकर मेवानगर, जैसलमेर, जसोल, तापरा, पचपदरा, कांठा, सोजत, कंटालिया आदि जगह। पेज नं. 17
6. बगड़ी की छतरियाँ में। पेज नं. 125
7. पहली महासति कुशल कुशालां, हीरां हीर रवी सी।
   बरजू, मेणां, रंगू, अजबू, रूपां, बणी-मणी सी।। पेज नं. 99
8. आचार्य पद का चुनाव, आचार्य पद व स्वर्गवास लाडनूं में हुआ। पेज नं. 171
9. सत्साहस के महावज्र से संघर्षों के पर्वत तोड़े। पेज नं. 196
10. सूइ नाकें सिंधर पावे कहो, किम आगे पेसे।
    ज्यूं हिंसा मांहे धर्य परूपे, ते सालोसाल न पेसे।। पेज नं. 164
11. सिरियारी में चातुर्मास में। पेज नं. 155
12. संत दुकान में ठहरे हुए थे। रात चोर आए। सेठजी की दुकान में घुसे, ताला तोड़ा, धन की थैलियाँ ले पेज नं. 111
    वापिस मुड़ने लगे। इतने में आवाज आई-भाई तुम कौन हो। वे कुछ बोलते उससे पूर्व ही तीन साधु सामने खड़े हो गए। चोरों ने जब साधुओं को देखा तो उनका भय कुछ कम हुआ और बोले - महाराज! हम चोर हैं, चोरी की नीयत से आए हैं। संत ने कहा-इतना बुरा काम करते हो यह ठीक नहीं है। अब साधु और चोर दोनों बैठ गए। साधु ने चौर्यकर्म की बुराई बताई और चोरों ने अपनी मजबूरी। आखिर साधु के उपदेश से प्रभावित होकर चोरों का दिल बदला और सदा-सदा के लिए चोरी न करने का संकल्प स्वीकार किया। सूर्योदय के समय लोग सुबह घूमने के लिए आने लगे वह सेठ भी घूमता-घूमता दुकान के पास से गुजरा तो टूटे ताले व खुला दरवाजा देखकर दंग रह गया। दुकान के ऊपर जाकर देखा-एक ओर चोर बैठे साधुओं से बातें कर रहे हैं। पास में धन की थैलियाँ पड़ी हैं। सेठ कुछ बोलता उससे पहले ही चोरों ने कहा-सेठजी आप चिन्ता न करें, आपका सारा धन सुरक्षित पड़ा है। यह सब इन संतों के उपदेश का ही प्रभाव है कि हम हमेशा के लिए इस बुराई से बच गए व आपका माल भी बच गया नहीं तो आप भी करीब-करीब साधु जैसे ही हो जाते। सेठ बड़ा खुश होकर मुनि को धन्यवाद देता हुआ घर चला गया। इसमें मुख्य बात है कि साधु के उपदेश से चोरों ने चोरी छोड़ी, इससे चोरों की आत्मा चोरी के पाप से बची। दूसरा सेठजी का धन बचा इसमें अहिंसा क्या है-अहिंसा का अर्थ है-असंयम से बचाव। अहिंसा और असंयम से बचाव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अहिंसा का अर्थ जीवरक्षा से ही नहीं आत्मा की पवित्रता से है, हृदय परिवर्तन से है।

आचार्य भिक्षु जीवन झाँकी प्रतियोगिता -XX के विजेता

पवन कुमार सेठिया	-	श्री डूंगरगढ़
मनाली जैन	-	इरोड़

लेख प्रतियोगिता के विजेता

तेरापंथ धर्मसंघ ढाई सदी : हमारी उपलब्धियाँ

कांता रांका	-	भीलवाड़ा
अमित बाफना	-	कोयम्बतूर
विमला रांका	-	भीलवाड़ा

भूल सुधार : रमेश डागा - किशोर मण्डल समिति सदस्य (पाथेय अंक 23 में प्रकाशित सदस्य सूची में छपने से रह गया)

अविनाश नाहर
सहमंत्री-प्रथम

चरणों को गतिमान बनाएं, सपनों को साकार बनाएं।